तेलुगु साहित्य एक अवलोकन

गुर्रमकोंडा नीरजा

तेलुगु साहित्य : एक अवलोकन

गुर्रमकोंडा नीरजा

आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद
के आर्थिक अनुदान से प्रकाशित

तेलुगु साहित्य : एक अवलोकन

(निबंध)

गुर्रमकोंडा नीरजा

ISBN : 978-93-80042-53-4

© गुर्रमकोंडा नीरजा

प्रकाशक

अकादमिक प्रतिभा

सरस्वती निवास, यू-9, सुभाष पार्क, नजदीक सोलंकी रोड,
उत्तम नगर, नई दिल्ली - 110 059 (भारत)

दूरभाष : +91-9811892544, +91-9899071610, +91-9899242486

ई-मेल : rkgpost@gmail.com, वेबसाइटः academicpratibha.com

प्रथम संस्करण

2012

प्राप्ति स्थान

श्री साहिती

303, मेधा टावर्स, राधाकृष्ण नगर,
अत्तापुर रिंग रोड, हैदराबाद - 500 048.

मोबाइल : +91-9849986346

ई-मेल : neerajagkonda@gmail.com

मूल्य : ₹. 225

मुद्रकः

हाईटेक प्रिंटर्स

1-3-183/40/81, एस.बी.आई. कॉलोनी, गांधीनगर, हैदराबाद-500 020.

दूरभाषः+ 91-9246371120, + 91-9246171120.

Telugu Saahitya : Ek Avalokan

(Essays)

By Gurramkonda Neeraja

Price ₹. **225/-**

प्रस्तावना

तेलुगु साहित्य के लोकोन्मुखी स्वर

तेलुगु भाषा के माधुर्य, लयबद्धता और शिष्टता का बखान एमेन्यू जैसे कई भाषा मर्मज्ञ कर चुके हैं। कई ने तो इसे पूर्व की 'इतालवी' कहकर इसकी भाषिक अभिव्यंजना और संरचना की सराहना की है। गुर्रमकोंडा नीरजा ने तेलुगु साहित्य का परिचयात्मक आकलन अपनी इस पुस्तक में किया है। सभी आलेख क्योंकि आंध्र सभा (दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा) की मासिक पत्रिका 'स्रवंति' के संपादकीय के रूप में छपे हैं अतः इनकी पठनीयता में कभी, कहीं, कोई रुकावट नहीं आती ।

लेखिका ने जटिलता भरे विस्तार की जगह उन मुद्दों को उभारने की कोशिश की है जिनसे तेलुगु साहित्य की सामाजिकता अथवा लौकिकता का उद्घाटन हो सके और इसके जरिए तेलुगु साहित्य में मनुष्य और मनुष्यता का जो भाव प्रारंभ से ही अंतर्भुक्त है, उभार पा सके । जी.नीरजा की यह पैनी दृष्टि ही पुस्तक की प्राण-रेखा है।

अन्नमाचार्य का परिचय देते हुए उनकी लोरियों, लोकगीतों को केंद्र में रखकर जिस तरह व्यावहारिक शैली, मुहावरों-लोकोक्तियों की चर्चा की गई है, लगता है तेलुगु में अमीर खुसरो पैदा हो गया हो । इसी तरह श्री कृष्णदेव राय का युग 'स्वर्णयुग' है या वे ललित कलाओं के आश्रयदाता थे या उनके दरबार में 'अष्टदिग्गज' थे - जैसी प्रेरक सूचनाओं के साथ कृष्णदेव राय के काल में द्रविड स्त्रियों की जीवन शैली, मछुआरों के वर्णन, ग्रामीण स्त्रियों के हास-पहिरास को जब लेखिका रेखांकित करती हैं तो तेलुगु साहित्य की लोक-चेतना के दर्शन अभिभूत कर देते हैं।

त्यागराज वैसे तो कर्नाटक संगीत के जन्मदाता माने जाते हैं। संगीत, साहित्य और भक्ति की त्रिवेणी उन्होंने प्रवाहित की। कीर्तन भी लिखे और

स्वरबद्ध भी किए। मेरे ज़ेहन में तुरंत हिंदी क्षेत्र के 'कीर्तनिये' आ बैठे। बंगाल में भी तो कीर्तन और बाउल गायन की परंपरा है। कैसे भारतीय संस्कृति गुँथी हुई है। क्षेत्र और भाषा का भेद तो सतही है, असली चीज़ है-संवेदनात्मक एकता। इसे ही पकड़ने की कोशिश जी.नीरजा ने की है।

समाज-सांस्कृतिक जागरण के दर्शन आधुनिक तेलुगु साहित्य में ज़्यादा खुले रूप में होते हैं। इसकी विशेषता लेखिका ने संकेतित की है - व्यावहारिक भाषा पर बल और प्रगतिशील विचारधारा । वीरेशलिंगम पंतुलु जागरण के अग्रदूत हैं - फिर उन्हें तेलुगुभाषी ही जोड़ते हैं कभी भारतेंदु से तो कभी ईश्वरचंद्र विद्यासागर से । पुनः भारतीय मानस की एकात्मकता का एक उज्ज्वल प्रतिबिंब। जी.नीरजा ने जागरणकालीन-तेलुगु-साहित्य में हास्य और व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विद्रूपता के उद्घाटन को खास विशेषता माना है जिसकी अभिव्यंजना में आंचलिक बोलियों का योगदान रहा है। व्यावहारिक भाषा आंदोलन प्रत्येक भारतीय भाषा का सच रहा है और समाज-सुधार युग की धारा सभी में समानांतर बही है। अवधान प्रक्रिया के प्रवर्तक तिरुपति वेंकट कविद्वय हैं तथा तेलुगु का पहला अखबार निकालनेवाले (के.एन.पंतुलु) 'अमृतांजन' के आविष्कारक थे, प्रसाद की भाँति देवुलपल्ली कृष्णशास्त्री ने भी अपनी पत्नी की मृत्यु पर 'कन्नीरु' (आँसू, 1922) नामक काव्य की रचना की, 1953 में जब आंध्र प्रदेश की राजधानी कर्नूल थी तब त्रिपुरनेनी गोपीचंद समाचार विभाग के निर्देशक थे - इस तरह की जानकारियाँ रोचकता पैदा करने वाली हैं। लेखिका की दृष्टि तेलुगु दलित साहित्य (दलितों को लेकर लिखा गया) और स्त्री विमर्श की ओर भी गई है। 'मालपल्ली' (भंगियों का गाँव : उन्नव लक्ष्मीनारायण), जनकवि जाषुवा का 'गब्बिलम' (चमगादड़, जो मेघदूत की पैरोडी है) जैसी रचनाएँ यह बताती हैं कि तेलुगु में दलित जीवन की व्याख्या अनावृत ढंग से और रूढ़ियों पर करारा प्रहार करते हुए की गई है ।

पुस्तक के पाँच आलोचनात्मक आलेख विचारोत्तेजक हैं। तीन आलेख

तेलुगु कृतियों की अनुवाद समीक्षा से संबंधित हैं। एक आलेख तेलुगु कविता (आधुनिक) के विविध रूपों को लेकर परिचयात्मक ढंग से लिखा गया है। और दूसरा स्त्रीसाहित्य (स्त्री लेखन) का अवलोकन है। स्त्री पर अत्याचार, छुआछूत, ऊँच-नीच (वर्ग भेद) के विरुद्ध प्रत्येक भारतीय भाषा में कितना कुछ लिखा जा चुका है। आज भी लिखा जा रहा है। कैसी विडंबना है यह। पुस्तक में ये संकेत बार-बार मिलेंगे।

तेलुगु साहित्य का इतिहास हिंदी में कई तेलुगुभाषी विद्वानों ने लिखा है। 'इतिहास' का अधिकांश हिस्सा कालविभाजन, नामकरण और प्रवृत्तियों के खाते में चला जाता है इसलिए रचनाकार और खास कर के रचनाओं के सरोकारों, संरचनाओं, शैलियों पर चर्चा सीमित रह जाती है। इस तरह की पुस्तकों का यह महत्व है कि ये भाषा की रचनाशीलता के उन आयामों पर प्रकाश डालती हैं जिनकी सामाजिक महत्ता एवं प्रासंगिकता है।

पुस्तक में कई बिंदु ऐसे हैं जो तुलनात्मक अध्ययन के लिए उकसाते हैं। अनुवाद की भूमिका को रेखांकित करते हैं। साहित्य के जरिए भाषा विकास की संभावना को व्यक्त करते हैं। और सबसे बढ़कर भारतीय मनीषा की संवेदनशीलता को 'इतिहास' के परिप्रेक्ष्य में पकड़ते हैं।

इस तरह के साफ-सुथरे लेखन के लिए मैं गुर्रमकोंडा नीरजा को बधाई देता हूँ। और यह आशा करता हूँ कि आगे भी वे तेलुगु साहित्य की विविधता को और भी गहराई के साथ देखेंगी तथा आगे के संदर्भ में इनका पुनर्पाठ तैयार करते हुए गंभीर और अनूठा विवेचन प्रस्तुत करेंगी।

इस दिशा में यह सार्थक कदम है। पाठक भी ऐसा ही महसूस करेंगे।

19 नवंबर, 2011.

-प्रो.दिलीप सिंह

कुलसचिव, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, टी.नगर, चेन्नई-600 017,

Dr. N. Gopi, M.A. (Telugu), Ph.D.
Professor of Telugu,
Former Vice-Chancellor,
P.S.Telugu University,
Professor Emeritus
Former Dean, Faculty of Arts,
Osmania University,
Hyderabad - 500 007.

Ph: (O): 040-27682294
(R): 040-27037585
Cell: +91 9391028496

शुभाशंसा

आज के समय में हिंदी और तेलुगु भाषाओं के बीच आदान-प्रदान में तेजी आई है। एक ऐसा समय था जब मुझे यह पीड़ा सालती थी कि जिस तरह हिंदी साहित्य अनुवादों के माध्यम से तेलुगु भाषा में प्राप्य है उस तरह तेलुगु साहित्य हिंदी भाषा भाषियों के लिए उपलब्ध क्यों नहीं हो रहा है। अतः मैं आंध्र प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग के मित्रों से इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करने के लिए आग्रह करता था । आज डॉ.नीरजा बहुमूल्य रत्नों के समान तेलुगु साहित्यकारों और संगीतकारों का परिचय विशाल हिंदी जगत को करवा रही हैं । वे मेरे बचपन से ही इन दोनों भाषाओं के बीच सेतु का कार्य निर्वाह करनेवाली पत्रिका 'स्रवंति' की वर्तमान सह-संपादक हैं । यह अत्यंत खुशी की बात है, सार्थक भी । संपादकीयों के रूप में लिखे हुए अपने 21 निबंधों को उन्होंने एक जगह संकलित करके हिंदी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है ।

तेलुगु भारत में हिंदी के बाद सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है । अतः तेलुगु में निहित साहित्यिक धरोहर से हिंदी जगत को परिचित कराना अत्यंत आवश्यक है । डॉ. नीरजा केवल विदुषी भर नहीं अपितु समय समय पर अपने आप को अद्यतन रखने वाली आलोचक भी हैं। इसलिए वे स्वाभाविक रूप से इतिहास बोध से भी संपन्न हैं । खास तौर पर समकालीन तेलुगु साहित्य को वे जिस दृष्टि से देख रही हैं, वह निरंतर परिवर्तित होते साहित्य के अनुशीलन का परिचायक है । मैंने 'नानीलु' नाम से जिस काव्य विधा का सूत्रपात किया उसकी रूप प्रक्रिया को स्पष्ट करना इसका एक उदाहरण है । इसी तरह तेलुगु साहित्य में स्त्रीवाद, दलितवाद आदि जो नए विमर्श सामने आ रहे हैं उनकी ओर भी ध्यान देते हुए उन्होंने उनका सटीक विवेचन-विश्लेषण भी अपने निबंधों में किया है ।

मनीषी साहित्यकार डॉ. ऋषभदेव शर्मा जी का मार्गदर्शन तो सोने में सुगंध जैसा है ही। इस संदर्भ में मैं सुश्री डॉ.नीरजा का हृदय से अभिनंदन करता हूँ ।

01.12.2011 **-एन. गोपि**

Residence : #13-1/5B, Srinivasapuram, Ramanthapur, Hyderabad - 500 013.

अनुक्रम

प्रस्तावना : तेलुगु साहित्य के लोकोन्मुखी स्वर - **प्रो. दिलीप सिंह** 5

शुभाशंसा : - **प्रो.एन.गोपि** 8

परिचय : - **प्रो.ऋषभ देव शर्मा** 10

आभार 12

1. पदकविता पितामह अन्नमाचार्य 15
2. आंध्र भोज श्री कृष्णदेव राय 19
3. कर्नाटक संगीत के 'गायक ब्रह्मा' त्यागराज 24
4. अवधानप्रवर्तक तिरुपति वेंकट कविद्वय 27
5. आंध्र के भारतेंदु वीरेशलिंगम पंतुलु 32
6. देशोद्धारक कशीनाथुनि नागेश्वरराव पंतुलु 42
7. कालजयी नाटक 'कन्याशुल्कम' के प्रणेता गुरजाडा वेंकटअप्पाराव 44
8. 'मालपल्ली' के प्रणेता उन्नव लक्ष्मीनारायण 51
9. तेलुगु साहित्य में गांधी की व्याप्ति 56
10. नवयुग कवि चक्रवर्ती गुर्रम जाषुवा 63
11. भावकवि चक्रवर्ती देवुलपल्ली कृष्णशास्त्री 68
12. मानवतावादी जनकवि श्रीश्री 74
13. व्यापक सरोकार वाले कथाकार त्रिपुरनेनी गोपीचंद 82
14. जनचेतना के प्रेरणापुंज आरुद्रा 88
15. दिगंबर कवि ज्वालामुखी 92
16. 'नानीलु' के प्रवर्तक प्रो.एन.गोपि 96
17. आधुनिक तेलुगु कविता के विविध स्वर 104
18. प्रेमानुभूति की कवयित्री पद्मलता 110
19. तेलुगु समाज का दर्पण बनती कहानियाँ 115
20. स्त्री जीवन की बेबाक कथाकार डी.कामेश्वरी 121
21. मानवाधिकारों के लिए संघर्षरत स्त्री साहित्य 126

पदकविता पितामह अन्नमाचार्य

''श्रुतुलै शास्त्रमुलै, पुराण कथलै सुज्ञानसारम्बुलै
यति लोकागम वीथुलै विविध मंत्रार्थम्बुलै नीतुलै ।
कृतुलै वेंकटशैल वल्लभ रति क्रीड़ा रहस्यम्बुलै
नुतुलै तालुलपाक अन्नय वचो नूत्मक्रियलु चेन्नगुन् ।।''

(संकीर्तन लक्षणमु 12)

(ताल्लपाक अन्नमाचार्य के पद स्वयं ही श्रुतियाँ हैं, शास्त्र और पुराण कथाएँ हैं । इनमें सुज्ञानसार के साथ-साथ लोकागम की विधियाँ भी निहित हैं तथा सभी मंत्रों का अर्थ भी संग्रहीत है । ये पद नुति (भगवान की स्तुति), नीति और सत्कार्य के रूप में हैं । ये पद श्री वेंकटेश्वर की रहस्यमय श्रृंगार लीलाओं से युक्त हैं । -चिन्नतिरुमलायार्य)

तेलुगु पदकविता पितामह, संकीर्तनाचार्य और हरिकीर्तनाचार्य आदी नामों से अभिहित अन्नमाचार्य (1424-1502) का जन्म 'कडपा' जिले के 'ताल्लपाक' नामक गाँव में हुआ था। इनके जन्म और मृत्यु की तिथियों के संबंध में विद्वानों में मतभेद है लेकिन यदि अन्नमाचार्य के अध्यात्म संकीर्तनों के ताम्रपत्र 1 में अंकित पद को ही प्रामाणिक माना जाए तो इसके अनुसार अन्नमाचार्य का जन्म शक वर्ष 1346 (9.5.1424 ई.) क्रोधी संवत्सर वैशाख शुद्ध पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र में और वैंकुठवास शक वर्ष 1424 (1502 ई.) दुंदुभी संवत्सर फाल्गुण कृष्ण द्वादशी (23.2.1502 ई.) को हुआ था ।

अन्नमाचार्य नारायण सूरी और लक्कमांबा के ज्येष्ठ पुत्र थे। कहा जाता है कि श्री वेंकटेश्वर की कृपा से लक्कमांबा के गर्भ से वेंकटेश्वर के खड्ग 'नंदक' ने ही अन्नमाचार्य के रूप में जन्म लिया। अतः अन्नमाचार्य बाल्यावस्था से ही बालाजी के अनन्य भक्त थे।

End of Preview.

Rest of the book can be read @

http://kinige.com/kbook.php?id=694

* * *